

नमो नमो निम्मलदंसणास्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

२७

भक्तपरिण्णा-चउत्थं पड्णयं

मुनि दीपरत्नसागर

Date : / / 2012

Jain Aagam Online Series-27

२७ गंथाणुक्कमो

कमंको	विसय	सुत्तं	गाहा	अणुक्कमो	पिट्ठंको
१	मंगलं-नाणमहत्तण	-	१-४	१-४	२
२	सासयासासय-सुखं	-	५-७	५-७	२
३	मरण-भेआइ	-	८-११	८-११	२
४	आलोयणा, पायच्छित्त	-	१२-२३	१२-२३	२
५	वय-सामाइय-आरोवणाइ	-	२४-३३	२४-३३	३
६	आचरण-खामणा- उवएस-आइ	-	३४-१७३	३४-१७३	४

२७ भत्तपरिण्णा – चउत्थं पइण्णयं

- [१] नमिऊण महाइसयं महानुभावं मुनिं महावीरं ।
भणिमो भत्तपरिण्णं निअसरणट्ठा परट्ठा य ॥
- [२] भवगहणभमणरीणा लहंति निव्वुइसुहं जमल्लीणा ।
तं कप्पहुमकानन-सुहयं जिनसासनं जयइ ॥
- [३] मनुयत्तं जिनवयणं च दुल्लहं पाविऊण सप्पुरिसा !
सासयसुहिक्करसिएहिं नाणवसिएहिं होयव्वं ॥
- [४] जं अज्जं सुहं भविणो संभरणीयं तयं भवे कल्लं ।
मग्गंति निरुवसग्गं अपवग्गसुहं बुहा तेणं ॥
- [५] नरविबुहेसरसोक्खं दुक्खं परमत्थओ तयं बिंति ।
परिणामदारूणमसासयं च जं ता अलं तेन ॥
- [६] जं सासय-सुहसाहण-माणाआराहणं जिणिंदाणं ।
ता तीए जइयव्वं जिनवयण-विसुद्धबुद्धीहिं ॥
- [७] तं नाण-दंसणाणं चरित्त-तवाण जिनपणीयाणं ।
जं आराहणमिणमो आणाआराहणं बिंति ॥
- [८] पव्वज्जाए अब्भुज्जओऽवि आराहओ अहासुत्तं ।
अब्भुज्जयमरणेणं अविगलमाराहणं लहइ ॥
- [९] तं अब्भुज्जयमरणं अमरणधम्मोहिं वन्नियं तिविहं ।
भत्तपरिन्ना इंगिणि पाओवगमं च धीरेहिं ॥
- [१०] भत्तपरिन्नामरणं दुविहं सवियारमो य अविआरं ।
सपरक्कमस्स मुणिणो संलिहियतणुस्स सविआरं ॥
- [११] अपरक्कमस्स काले अप्पहुप्पंतंमि जं तमवियारं ।
तमहं भत्तपरिन्नं अहापरिन्नं भणिस्सामि ॥
- [१२] धिइबलवियलाणमकाल मच्चुकलिआणमकयकरणाणं ।
निरवज्जमज्जकालिय-जईण जुग्गं निरुवसग्गं ॥
- [१३] पसम सुहसप्पिवासो असोअ-हासो सजीवियनिरासो ।
विसयसुह-विगयरागो धम्मज्जम-जायसंवेगो ॥
- [१४] निच्छिअमरणावत्थो वाहिग्घत्थो जई गिहत्थो वा ।
भविओ भत्तपरिन्नाइ नायसंसारनेग्गुन्नो ॥
- [१५] पच्छायावरपरद्धो पियधम्मो दोसदूसणसयण्हो ।
अरहइ पासत्थाई वि दोसदोसिल्लकलिओऽवि ॥

- [१६] वाहि-जर-मरणमयरो निरंतरूपपतिनीर निकुरंबो ।
परिणामदारुणदुहो अहो दुरंतो भवसमुद्धो ॥
- [१७] इअ कलिरुण सहरिसं, गुरुपामूलेऽभिगम्म विनएणं ।
भालयलमिलिय-करकमल-सेहरो वंदितं भणइ ॥
- [१८] आरुहियमहं सुपुरिस ! भत्तपरिन्ना-पसत्थ-बोहित्थं ।
निज्जामएण गुरुणा इच्छामि भवन्नवं तरितं ॥
- [१९] कारुण्णामय-नीसंद-सुंदरो सोऽवि से गुरु भणइ ।
आलोयण-वय-खामण-पुरस्सरं तं पवज्जेसु ॥
- [२०] इच्छामोति भणिता भत्ति-बहुमान-सुद्ध-संकप्पो ।
गुरुणो विगयावाए पाए अभिवंदितं विहिणा ॥
- [२१] सल्लं उद्धरिउमनो संवेगुव्वेय तिव्वसद्धाओ ।
जं कुणइ सुद्धिहेउं सो तेनाऽऽराहओ होइ ॥
- [२२] अह सो आलोयणदोसवज्जियं उज्जुयं जहाऽऽयरियं ।
बालुव्व बालकालाउ देइ आलोयणं सम्मं ॥
- [२३] ठविए पायच्छित्ते गणिणा गणिसंपयासमग्गेणं ।
सम्ममनुमन्निय तवं अपावभावो पुणो भणइ ॥
- [२४] दारुणदुहज्जलयर नियरभीमभवजलहि-तारणसमत्थे ।
निप्पच्चवाय पोए महव्वए अम्ह उक्खिवसु ॥
- [२५] जइ वि स खंडियचंडो अक्खंडमहव्वओ जई जइ वि ।
पव्वज्जवउट्ठावण-मुट्ठावणमरिहइ तहावि ॥
- [२६] पहुणो सुकयाणत्तिं भिच्चा पच्चप्पिणंति जह विहिणा ।
जावज्जीवपइण्णाणत्तिं गुरुणो तहा सोऽवि ॥
- [२७] जो साइयारचरणो आउट्ठियदंडखंडियवओ वा ।
तह तस्स वि सम्ममुवट्ठियस्स उट्ठावणा भणिया ॥
- [२८] ततो तस्स महव्वय पव्वयभारोनमंतसीसस्स ।
सीसस्स समारोवइ सुगुरु वि महव्वए विहिणा ॥
- [२९] अह होज्ज देसविरओ सम्मत्तरओ रओ य जिनधम्मे ।
तस्स वि अणुव्वयाइं आरोविज्जंति सुद्धाइं ॥
- [३०] अनियाणोदारमनो हरिसवस-विसट्ठकंटय-करालो ।
पूएइ गुरु संघं साहम्मिय-माय भत्तीए ॥
- [३१] नियदव्वमपुव्व जिणिंदभवन जिनबिंब वरपइट्ठासु ।
वियरइ पसत्थपुत्थय सुतित्थ तित्थयरपूयासु ॥
- [३२] जइ सोऽवि सव्वविरई कयानुराओ विसुद्धमइ-काओ ।
छिन्नसयणाणुराओ विसयविसाओ विरत्तो अ ॥

- [३३] संथारयपव्वज्जं पव्वज्जइ सोऽवि नियम निरवज्जं ।
सव्वविरइ-प्पहाणं सामाइय-चरित्त-मारुहइ ॥
- [३४] अह सो सामाइयधरो पडिवन्नमहव्वओ य जो साहू ।
देसविरओ अ चरिमे पच्चक्खामि ति निच्छइओ ॥
- [३५] गुरुगुणगुरूणो गुरुणो पयपंकय नमियमत्थओ भणइ ।
भयवं! भत्तपरिन्नं तुम्हानुमयं पवज्जामि ॥
- [३६] आराहणाइ खेमं तस्सेव य अप्पणो य गणिवसहो ।
दिव्वेण निमित्तेणं पडिलेहइ इहरहा दोसा ॥
- [३७] ततो भवचरिमे सो पच्चक्खाइ ति तिविहमाहारं ।
उक्कोसियाणि दव्वाणि तस्स सव्वाणि दंसिज्जा ॥
- [३८] पासित्तु ताइं कोई तीरं पत्तस्सिमेहिं किं मज्झ ? ।
देसं च कोइ भोच्चा संवेगगओ विचिंतेइ ॥
- [३९] किं च तं नोवभुत्तं मे, परिणामासुई सुई ।
दिट्ठसारो सुहं झाइ, चोयणेसाऽवसीयओ ॥
- [४०] उयरमलसोहणट्ठा समाहिपानं मणुन्नमेसोऽवि ।
महुरं पज्जेअव्वो मंदं च विरेयणं खमओ ॥
- [४१] एल-तय-नाग-केसर-तमालपत्तं ससक्करं दुद्धं ।
पाऊण कढियसीयल समाहिपानं तओ पच्छा ॥
- [४२] महुरविरेयणमेसो कायव्वो फोप्फलाइदव्वेहिं ।
निव्वाविओ य अग्गी समाहिमेसो सुहं लहइ ॥
- [४३] जावज्जीवं तिविहं आहारं वोसिरइ इहं खवगो ।
निज्जवगो आयरिओ संघस्स निवेयणं कुणइ ॥
- [४४] आराहण-पच्चइअं खमगस्स य निरुवसग्ग-पच्चइअं ।
तो उस्सग्गो संघेण होइ सव्वेण कायव्वो ॥
- [४५] पच्चक्खाविंति तओ तं ते खमयं चउव्विहाहारं ।
संघसमुदायमज्झे चिइवंदनपुव्वयं विहिणा ॥
- [४६] अहवा समाहिहेउं सागारं चयइ तिविहमाहारं ।
तो पाणयं पि पच्छा वोसिरियव्वं जहाकालं ॥
- [४७] तो सो नमंतसिरसंघडंत-करकमलसेहरो विहिणा ।
खामेइ सव्वसंघं संवेगं संजणेमाणो ॥
- [४८] आयरिय उवज्झाए सीसे साहम्मिए कुल गणे य ।
जे मे केइ कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ॥
- [४९] सव्वे अवराहपए खामेमि अहं खमेउ मे भयवं !
अहमवि खमामि सुद्धो गुणसंघायस्स संघस्स ॥

- [५०] इय वंदन-खामण गरिहणाहिं भवसयसमज्जियं कम्मं ।
उवनेइ खणेण खयं मियावई रायपति व्व ॥
- [५१] अह तस्स महव्वयसुट्ठिअस्स जिनवयणभावियमइस्स ।
पच्चक्खायाहारस्स तिव्व संवेग-सुहयस्स ॥
- [५२] आराहणलाभाओ कयत्थमप्पाणयं मुणंतस्स ।
कलुसकलतरणलट्ठिं अनुसट्ठिं देइ गणिवसहो ॥
- [५३] कुग्गहपरुढमूलं मूला उच्छिंद वच्छ ! मिच्छत्तं ।
भावेसु परमतत्तं सम्मतं सुत्तनीईए ॥
- [५४] भत्तिं कुणसु तिव्वं गुणानुराण वीयरायाणं ।
तह पंचनमुक्कारे पवयणसारे रइं कुणसु ॥
- [५५] सुविहियहियनिज्झाए सज्झाए उज्जुओ सया होसु ।
निच्चं पंच महव्वयरक्खं कुण आयपच्चक्खं ॥
- [५६] उज्झसु नियाणसल्लं मोहमहल्लं सुकम्मनिस्सल्लं ।
दमसु य मुनिंदसंदोह निंदिए इंदियमयंदे ॥
- [५७] निव्वाणसुहावाए विइन्न निरयाइदारुणावाए ।
हणसु कसायपिसाए विसयतिसाए सइसहाए ॥
- [५८] काले अपहुप्पंते सामन्ने सावसेसिए इण्हिं ।
मोह-महारिउ-दारण-असिलट्ठिं सुणसु अनुसट्ठिं ॥
- [५९] संसारमूलबीयं मिच्छत्तं सव्वहा विवज्जेहि ।
सम्मत्तं दढचित्तो होसु नमुक्कारकुसलो य ॥
- [६०] मगतिण्हियाहिं तोयं मन्नंति नरा जहा सतण्हाए ।
सोक्खाइं कुहम्माओ तहेव मिच्छत्त मूढमनो ॥
- [६१] नवि तं करेइ अग्गी नेव विसं नेव किण्हसप्पो य ।
जं कुणइ महादोसं तिव्वं जीवस्स मिच्छत्तं ॥
- [६२] पावइ इहेव वसनं तुरुमिणिदत्तुव्व दारुणं पुरिसो ।
मिच्छत्तमोहिअमनो साहुपओसाउ पावाओ ॥
- [६३] मा कासि तं पमायं सम्मत्ते सव्वदुक्खनासणए ।
जं सम्मत-पइट्ठाइं नाण-तव-विरिअ-चरणाइं ॥
- [६४] भावानुराय पेमानुराय सुगुणानुरायरत्तो य ।
धम्मनुरायरत्तो य होसु जिनसासने निच्चं ॥
- [६५] दंसणभट्ठो भट्ठो न हु भट्ठो होइ चरणपब्भट्ठो ।
दंसणमनुपत्तस्स हु परियडणं नत्थि संसारे ॥
- [६६] दंसणभट्ठो भट्ठो दंसणभट्ठस्स नत्थि निव्वाणं ।
सिज्झंति चरणरहिआ दंसणरहिआ न सिज्झंति ॥

- [६७] सुद्धे सम्मते अविरओऽवि अज्जेइ तित्थयरनामं ।
जह आगमेसिभद्दा हरिकुलपहु सेणिआईया ॥
- [६८] कल्लाणपरंपरयं लहंति जीवा विसुद्धसम्मता ।
सम्मदंसणरयणं नऽग्धइ ससुराऽसुरे लोए ॥
- [६९] तेलुक्कस्स पहुत्तं लद्धूणवि परिवडंति कालेणं ।
सम्मत्तं पुण लद्धुं अक्खयसुक्खं लहइ मोक्खं ॥
- [७०] अरिहंत सिद्ध चेइय पवयण आयरिय सव्वसाहूसुं ।
तिव्वं करेसु भत्तिं तिगरणसुद्धेण भावेणं ॥
- [७१] एगा वि सा समत्था जिनभत्ती दुग्गइं निवारेउं ।
दुलहाइं लहावेउं आसिद्धिं परंपर सुहाइं ॥
- [७२] विज्जा वि भत्तिमंतस्स सिद्धिमुवयाइ होइ फलया य ।
किं पुन निव्वुइविज्जा सिज्झिहिइ अभत्तिमंतस्स ? ॥
- [७३] तेसिं आराहणनायगाण न करिज्ज जो नरो भत्तिं ।
धणियं पि उज्जमंतो सालिं सो ऊसरे ववइ ॥
- [७४] बीएण विना सस्सं इच्छइ सो वासमब्भएण विना ।
आराहण-मिच्छंतो आराहय-भत्तिमकरंतो ॥
- [७५] उत्तमकुलसंपत्तिं सुहनिप्पत्तिं च जिनभत्ती ।
मणियारसेट्ठीजीवस्स दद्दुरस्सेव रायगिहे ॥
- [७६] आराहणापुरस्सरमणन्न-हियओ विसुद्धलेसाओ ।
संसारक्खयकरणं तं मा मुंची नमुक्कारं ॥
- [७७] अरिहंतनमुक्कारो इक्कोऽवि हविज्ज जो मरणकाले ।
सो जिनवरेहिं दिट्ठो संसारुच्छेअण-समत्थो ॥
- [७८] मिंठो किलिट्ठकम्मो नमो जिणाणं ति सुकयपणिहाणो ।
कमलदलक्खो जक्खो जाओ चोरो ति सूलिहओ ॥
- [७९] भाव नमुक्कार विवज्जियाइं जीवेण अकयकरणाइं ।
गहियाणि य मुक्काणि य अनंतसो दव्व-लिंगाइं ॥
- [८०] आराहणापडागागहणे हत्थो भवे नमोक्कारो ।
तह सुगइमग्गगमने रहु व्व जीवस्स अप्पडिहो ॥
- [८१] अन्नाणीऽवि य गोवो आराहिता मओ नमुक्कारं ।
चंपाए सेट्ठिसुओ सुदंसणो विस्सुओ जाओ ॥
- [८२] विज्जा जहा पिसायं सुट्ठुवउत्ता करेइ पुरिसवसं ।
नाणं हिययपिसायं सुट्ठु-वउत्तं तह करेइ ॥
- [८३] उवसमइ किण्हसप्पो जह मंतेण विहिणा पउत्तेणं ।
तह हियय किण्हसप्पो सुट्ठुवउत्तेण नाणेणं ॥

- [८४] जह मक्कडओ खणमवि मज्झत्थो अच्छिउं न सक्केइ ।
तह खणमवि मज्झत्थो विसएहिं विना न होइ मनो ॥
- [८५] तम्हा स उट्ठिमनो मनमक्कडओ जिनोवएसेणं ।
काउं सुत्तनिबद्धो रामेयव्वो सुहज्झाणे ॥
- [८६] सूई जहा ससुत्ता न नस्सई कयवरंमि पडिया वि ।
जीवोऽवि तह ससुत्तो न नस्सई गओ वि संसारे ॥
- [८७] खंडसिलोगेहि जवो जइ ता मरणाउ रक्खिओ राया ।
पत्तो अ सुसामण्णं किं पुण जिनवुत्तसुत्तेणं ? ॥
- [८८] अहवा चिलाइपुत्तो पत्तो नाणं तहाऽमरत्तं च ।
उवसम विवेग संवर पयसुमरणमित्त-सुयनाणो ॥
- [८९] परिहर छज्जीववहं सम्मं मनवयणकायजोगेहिं ।
जीवविसेसं नाउं जावज्जीवं पयत्तेणं ॥
- [९०] जह ते न पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
सव्वायरमुवउत्तो अत्तोवम्मेण कुणसु दयं ॥
- [९१] तुंगं न मंदराओ आगासाओ विसालयं नत्थि ।
जह तह जयंमि जाणसु धम्ममहिंसासमं नत्थि ॥
- [९२] सव्वे वि य संबंधा पत्ता जीवेण सव्वजीवेहिं ।
तो मारंतो जीवे मारइ संबंधिनो सव्वे ॥
- [९३] जीववहो अप्पवहो जीवदया अप्पणो दया होइ ।
ता सव्व जीव-हिंसा परिचत्ता अत्तकामेहिं ॥
- [९४] जावइयाइं दुक्खाइं हुंति चउग्गइगयस्स जीवस्स ।
सव्वाइं ताइं हिंसा-फलाइं निउणं वियाणाहि ॥
- [९५] जंकिचि सुहमुयारं पहुत्तणं पयइ सुंदरं जं च ।
आरुग्गं सोहग्गं तं तमहिंसाफलं सव्वं ॥
- [९६] पाणोऽवि पाडिहेरं पत्तो छूढोऽवि सुंसुमारदहे ।
एगेण वि एगदिनऽज्जिएणऽहिंसावयगुणेणं ॥
- [९७] परिहर असच्चवयणं सव्वंपि चउत्विहं पयत्तेणं ।
संजमवंता वि जओ भासादोसेण लिप्पंति ॥
- [९८] हासेण व लोहेण व कोहेण भएण वावि तमसच्चं ।
मा भणसु भणसु सच्चं जीवहियत्थं पसत्थमिणं ॥
- [९९] विस्ससणिज्जो माया व होइ पुज्जो गुरूव्व लोयस्स ।
सयणु व्व सच्चवाई पुरिसो सव्वस्स होइ पिओ ॥
- [१००] होउ व जडी सिंहंडी मुंडी वा वक्कली व नग्गो वा ।
लोए असच्चवाई भण्णइ पासंड-चंडालो ॥

- [१०१] अलिअं सइं पि भणियं विहणइ बहुआइं सच्चवयणाइं ।
पडिओ नरयंमि वसू एक्केण असच्च-वयणेणं ॥
- [१०२] मा कुणसु धीर ! बुद्धिं अप्पं व बहुं व परधनं धेतुं ।
दंतंतरसोहणयं किलिंचमित्तं पि अविदिन्नं ॥
- [१०३] जो पुन अत्थं अवहरइ तस्स सो जीवियं पि अवहरइ ।
जं सो अत्थकएणं उज्झइ जीअं न उण अत्थं ॥
- [१०४] तो जीवदयापरमं धम्मं गहिऊण गिण्ह माऽदिन्नं ।
जिन-गणहरपडिसिद्धं लोगविरूद्धं अहम्मं च ॥
- [१०५] चोरो परलोगंमि वि नारय-तिरिएसु लहइ दुक्खाइं ।
मनुयत्तणे वि दीनो दारिद्धोवद्दुओ होइ ॥
- [१०६] चोरिक्कनिवितीए सावयपुत्तो जहा सुहं लहई ।
किट्ठि-मोरपिच्छ-चित्ति-गुट्ठी-चोराण चलणेसु ॥
- [१०७] रक्खाहि बंभचेरं बंभगुतीहिं नवहिं परिसुद्धं ।
निच्चं जिणाहि कामं दोसपकामं वियाणिता ॥
- [१०८] जावइया किर दोसा इहपरलोए दुहावहा होंति ।
आवहई ते सव्वे मेहुणसन्ना मनूसस्स ॥
- [१०९] रइ-अरइ-तरल-जीहा-जुएण संकप्प-उब्भइ-फणेणं ।
विसय-बिलवासिणा मय-मेहुण बिब्बोय-रोसेणं ॥
- [११०] कामभुयंगेण दट्ठा लज्जा-निम्मोय-दप्प-दाढेणं ।
नासंति नरा अवसा दुस्सह-दुक्खावह-विसेणं ॥
- [१११] लल्लक्कनिरयवियणाओ घोरसंसारसायरूव्वहणं ।
संगच्छइ न य पिच्छइ तुच्छत्तं कामियसुहस्स ॥
- [११२] वम्महसरसयविद्धो गिद्धो वणिउ व्व रायपतीए ।
पाउक्खालयगेहे दुग्गंधेऽनेगसो वसिओ ॥
- [११३] कामासतो न मुणइ गम्माऽगम्मं पि वेसियाणु व्व ।
सिट्ठी कुबेरदत्तो निययसुयासुरयरइरत्तो ॥
- [११४] पडिपिल्लिय कामकलिं कामग्घत्थासु मुयसु अनुबंधं ।
महिलासु दोसविस-वल्लरीसु पयइं नियच्छंतो ॥
- [११५] महिला कुलं सुवंसं पियं सुयं मायरं च पियरं च ।
विसयंधा अगणंती दुक्खसमुद्दम्मि पाडेइ ॥
- [११६] नीयंगमाहिं सुपओहराहिं उप्पिच्छ मंथरगईहिं ।
महिलाहिं निन्नयाहि व गिरिवरगुरूया वि भिज्जंति ॥
- [११७] सुट्ठु वि जियासु सुट्ठु वि पियासु सुट्ठु वि परूढपेमासु ।
महिलासु भुअंगीसु व वीसंभं नाम को कुणइ ? ॥

- [११८] वीसंभनिब्भरं पि हु उवयारपरं परूढपणयं पि ।
कयविप्पियं पियं झति निति निहणं हयासाओ ॥
- [११९] रमणीयदंसणाओ सोमालंगीओ गुणनिबद्धाओ ।
नवमालइमालाओ हरंति हिययं महिलियाओ ॥
- [१२०] किं तु महिलाण तासिं दंसणसुंदरजनियमोहाणं ।
आलिंणमइरा देइ वज्झमालाण व विनासं ॥
- [१२१] रमणीण दंसणं चेव सुंदरं होऊ संगमसुहेण ।
गंधोच्चिय सुरहो मालईइ मलणं पुण विनासो ॥
- [१२२] साकेअपुराहिवई देवरई रज्जसोक्खपब्भट्ठो ।
पंगुलहेतुं छूढो वूढो य नईइ देवीए ॥
- [१२३] सोयसरी दुरियदरी कवडकुडी महिलिआ किलेसकरी ।
वइरविरोयणअरणी दुक्खखणी सुक्खपडिवक्खा ॥
- [१२४] अमुणियमण-परिकम्मो सम्मं को नाम नासिउं तरइ ।
वम्महसरपसरोहे दिट्ठिच्छोहे मयच्छीणं ? ॥
- [१२५] घनमालाओ व दूरुन्नमंतसुपओहराओ वड्ढंति ।
मोहविसं महिलाओ आलक्कविसं व पुरिसस्स ॥
- [१२६] परिहरसु तओ तासिं दिट्ठिं दिट्ठीविसस्स व अहिस्स ।
जं रमणि-नयनबाणा चरितपाणे विनासेंति ॥
- [१२७] महिलासंसग्गीए अग्गी इव जं च अप्पसारस्स ।
मयणं व मनो मुणिणोऽवि हंत सिग्घं चिअ विलाइ ॥
- [१२८] जइ वि परिचत्तसंगो तवतनुयंगो तहा वि परिवडइ ।
महिलासंसग्गीए कोसाभवणूसिय व्व रिसी ॥
- [१२९] सिंगारतरंगाए विलासवेलाइ जोव्वणजलाए ।
पहसियफेणाए मुनी नारिनईए न बुड्ढंति ? ॥
- [१३०] विसयजलं मोहकलं विलासबिब्बोयजलयराइणं ।
मयमयरं उत्तिण्णा तारुण्णमहण्णवं धीरा ॥
- [१३१] अब्भितर-बाहिरए सव्वे गंथे तुमं विवज्जेहि ।
कयकारियऽनुमईहिं काय-मनो-वय जोगेहिं ॥
- [१३२] संगनिमित्तं मारेइ भणइ अलीयं करेइ चोरिक्कं ।
सेवइ मेहुण मुच्छं अप्परिमाणं कुणइ जीवो ॥
- [१३३] संगो महाभयं जं विहेडिओ सावण्ण संतेणं ।
पुत्तेण हिए अत्थंमि मणिवई कुंचिएण जहा ॥
- [१३४] सव्वग्गंथविमुक्को सीईभूओ पसंतचित्तो य ।
जं पावइ मुत्तिसुहं न चक्कवट्ठी वि तं लहइ ॥

- [१३५] निस्सल्लस्सेह महव्वयाइं अक्खंड निव्वणगुणाइं ।
उवहम्मंति य ताइं नियाणसल्लेण मुणिणोऽवि ॥
- [१३६] अह रागदोसगब्भं मोहग्गब्भं च तं भवे तिविहं ।
धम्मत्थं हीनकुलाइ-पत्थणं मोहगब्भं तं ॥
- [१३७] रागेण गंगदत्तो दोसेणं विस्सभूइमाईया ।
मोहेण चंडपिंगलमाईआ हुंति दिट्ठंता ॥
- [१३८] अगणिय जो मुखसुहं कुणइ नियाणं असारसुहहेउं ।
सो कायमणिकएणं वेरुल्लिअमणिं पणासेइ ॥
- [१३९] दुक्खक्खय कम्मक्खय समाहिमरणं च बोहिलाभो य ।
एयं पत्थेयव्वं न पत्थणिज्जं तओ अन्नं ॥
- [१४०] उज्झियनियाणसल्लो निसिभत्तनियति समिइ गुतीहिं ।
पंचमहव्वयरक्खं कयसिवसुक्खं पसाहेइ ॥
- [१४१] इंदियविसयपसत्ता पडंति संसारसायरे जीवा ।
पक्खि व्व छिन्नपक्खा सुसील-गुण-पेहुण-विहूणा ॥
- [१४२] न लहइ जहा लिहंतो मुहिल्लियं अट्ठियं रसं सुणओ ।
सोसइ तालुयरसिअं विलिहंतो मन्नए सुक्खं ॥
- [१४३] महिलापसंगसेवी न लहइ किंचि वि सुहं तहा पुरिसो ।
सो मन्नए वराओ सयकायपरिस्समं सुक्खं ॥
- [१४४] सुट्ठुवि मग्गिज्जंतो कत्थ वि कयलीइ नत्थि जह सारो ।
इंदिअविसएसु तहा नत्थिं सुहं सुट्ठु वि गविट्ठं ॥
- [१४५] सोएण पवसियपिआ चक्खूराएण माहुरो वणिओ ।
घाणेण रायपुत्तो निहओ जीहाए सोदासो ॥
- [१४६] फासिंदिएण दुट्ठो नट्ठो सोमालियामहीपालो ।
एक्किक्केण वि निहया किं पुन जे पंचसु पसत्था ? ॥
- [१४७] विसयाविक्खो निवडइ निरविक्खो तरइ दुत्तरभवोहं ।
देवी-देवसमागय-भाउय-जुअलं व भणिअं च ॥
- [१४८] छलिआ अवयक्खंता निरावयक्खा गया अविग्घेणं ।
तम्हा पवयणसारं निरावयक्खेण होयव्वं ॥
- [१४९] विसए अवियक्खंता पडंति संसारसायरे घोरे ।
विसएसु निरवयक्खा तरंति संसारकंतारं ॥
- [१५०] ता धीर ! घीइबलेणं दुद्धंते दमसु इंदिय-मइंदे ।
तेणुक्खय-पडिवक्खो हराहि आराहण-पडागं ॥
- [१५१] कोहाईण विवागं नारुण य तेसि निग्गहेण गुणे ।
निग्गिण्ह तेण सुपुरिस ! कसायकलिणो पयत्तेणं ॥

- [१५२] जं अइतिक्खं दुक्खं जं च सुहं उत्तमं तिलोईए ।
तं जाणं कसायाणं वुड्ढिक्खयहेउयं सव्वं ॥
- [१५३] कोहेण नंदमाई निहया मानेन फरसुरामाई ।
मायाइ पंडरज्जा लोहेणं लोहनंदाई ॥
- [१५४] इय उवएसामयपाणएण पल्हाइअम्मि चित्तंमि ।
जाओ सुनिव्वुओ सो पाऊण व पाणियं तिसिओ ॥
- [१५५] इच्छामो अनुसट्ठिं भंते ! भवपंक-तरण-दढलट्ठिं ।
जं जह वुत्तं तं तह करेमि विनओणओ भणइ ॥
- [१५६] जइ कह वि असुहकम्मोदएण देहम्मि संभवे वियणा ।
अहवा तण्हाईया परीसहा से उदीरिज्जा ॥
- [१५७] निद्धं महुं पल्हायणिज्जं हिययंगमं अणलियं च ।
तो सेहावेयव्वो सो खवओ पण्णवन्तेणं ॥
- [१५८] संभरसु सुयण ! जं तं मज्झंमि चउव्विहस्स संघस्स ।
वूढा महापइण्णा अहयं आराहइस्सामि ॥
- [१५९] अरिहंत-सिद्ध-केवलिपच्चक्खं सव्व-संघ-सक्खिस्स ।
पच्चक्खाणस्स कयस्स भंजणं नाम को कुणइ ? ॥
- [१६०] भालुंकीए करुणं खज्जंतो घोरवियणत्तोऽवि ।
आराहणं पवन्नो ज्ञाणेण अवंतिसुकुमालो ॥
- [१६१] मुग्गिल्लगिरिम्मि सुकोसलोऽवि सिद्धत्थदइयओ भयवं ।
वग्घीए खज्जंतो पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [१६२] गुट्ठे पाओवगओ सुबंधुणा गोमए पलिवियम्मि ।
डज्झंतो चाणक्को पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [१६३] रोहीडगम्मि सत्तीहओ वि कुंचेण अग्गिनिवदइओ ।
तं वेयणमहियासिय पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥
- [१६४] अवलंबिरुण सत्तं तुमं पि ता धीर ! धीरयं कुणसु ।
भावेसु य नेगुन्नं संसार-महा-समुद्धस्स ॥
- [१६५] जम्म-जरा-मरणजलो अणाइमं वसणसावयाइन्नो ।
जीवाण दुक्खहेऊ, कट्ठं रूद्धो भवसमुद्धो ॥
- [१६६] धन्नोऽहं जेण मए अनोरपारंमि भवसमुद्धम्मि ।
भवसयसहस्सदुलहं लद्धं सद्धम्मजाणमिणं ॥
- [१६७] एअस्स पभावेणं पालिज्जंतस्स सइ पयत्तेणं ।
जम्मंतरेऽवि जीवा पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥
- [१६८] चिंतामणी अऊव्वो एअमपुव्वो य कप्परुक्खुत्ति ।
एवं परमो मंतो एयं परमामयसरिच्छं ॥

- [१६९] अह मणिमंदिर-सुंदर-फुरंत-जिनगुण-निरंजणुज्जोओ ।
पंचनमुक्कारसमे पाणे पणओ विसज्जेइ ॥
- [१७०] परिणामविसुद्धीए सोहम्मे सुरवरो महिइढीओ ।
आराहिऊण जायइ भत्तपरिन्नं जहन्नं सो ॥
- [१७१] उक्कोसेणं गिहत्थो अच्चुयकप्पंमि जायए अमरो ।
निव्वाणसुहं पावइ साहू सव्वट्ठसिद्धिं वा ॥
- [१७२] इय जोईसर जिनवीर भद्धभणियानुसारिणीमिणमो ।
भत्तपरिन्नं धन्ना पढंति निसुणंति भावेंति ॥
- [१७३] सत्तरिसयं जिणाण व गाहाणं समयखित्तपन्नतं ।
आराहतो विहिणा सासयसुक्खं लहइ मोक्खं ॥

मुनि दीपरत्तसागरेण संशोधितः सम्पादितश्च “भत्तपरिण्णा पइण्णयं सम्मतं”

२७

“भत्तपरिण्णा-चउत्थं पइण्णयं” सम्मतं